प्रफुल्ल कोलख्यान की कुछ कविताएँ

प्रफुल्ल कोलख्यान

स्मृतिशेष पितामही इंद्रमाया की उस कलम की तलाश में
--- जो उनके हाथ से छिटक कर
इतनी दूर जा गिरी कि
उन्हें कभी नहीं मिली ---
ये कविताएँ
उन्हें समर्पित है
जो गढ़ने में इतने व्यस्त हैं कि
पढ़ने की फुरसत नहीं

सुंदरतम काव्य

ये हाथ
बड़े कमजोर दिखते हैं न
मगर इन्हीं की रची हैं
वे सारी-की-सारी मजबूतियाँ

जिन पर तुम्हें नाज है

इन से
अब बात छिपी नहीं है कि
इनकी मजबूतियों का
अपहरण होता रहा है
होता रहा है इस्तेमाल
तिजोरियों को भरने के लिए
ठोंगों के खिलाफ

सच मानो
ये हाथ
जिस दिन
मजबूतियाँ गढ़नेवाली ईंट को
तुम्हारी इमारत की
बुनियाद में रखने से
नट जायेंगे
उठ जायेंगे
पूरी विचार शक्ति के साथ
तुम्हारे खिलाफ
गूँगी हो जायेगी
लागातार चीखनेवाली सत्ता की
वाचाल बंदूक

धमनियों में बह रही
आग को
निकलने दो
पसीने के लिए
जरा खून को
मचलने दो

देख लेना
कमजोर दिखनेवाले हाथ

तुम्हारी पीठ पर
रच डालेंगे बखूबी
अपनी मजबूती का
सुंदरतम काव्य

धरती उर्वरा है

इसी धुँआस की कोख से
निकलेगा
नया सूरज

यह सच है कि
आकाश
जब कभी
सिकुड़ता है
सब से पहले
सूरज की हत्या होती है
धरती उर्वरा है

धरती
नये आकाश को
आकार देती हुई
उछाल देती है
नया सूरज

और किरणें
नयी हवा के साथ
निकल पड़ती हैं
फाग की खोई हुई
लड़ी की खोज में

सबसे बड़ा मनोरंजन

धुँआती हुई
लकड़ी को फूँकती है

माँ धधकती है

बहते हुए
आँसू
आग में पलकर
लाल लोहे की तरह
चमकते हैं सिग्नल की जगह

मगन
नाचते हैं बच्चे
जुगनुओं के संग
फूली
नहीं समाती है रोटी

यकीनन
दुनिया के
सब से बड़े
मनोरंजन का
नाम है
रोटी

भूमंडलीकरण

हेड मास्टर की मेज पर
रखा है

एक बड़ा-सा ग्लोब
ग्लोब नाचता है
अँगुलियों के इशारे पर
पूरा-का-पूरा ग्लोब नाचता है
रात दिन हो जाती है
दिन रात हो जाता है
कहीं कुछ नहीं होता
सिवा इसके कि
अँगुलियों के इशारे पर
पूरा-का-पूरा ग्लोब नाचता है

ग्लोब के नाचने से
मौकम कतई नहीं बदलता है
इस बात को कौन नहीं जानता है?

मँजी हुई शर्म का जनतंत्र

तेज-तेज हवा में
कविता फड़क रही है

चाँदनी की लाश पर
अँधेरों का पहरा है

और सं स द!
है वह चंबल
जिसमें
इस देश में
जनतंत्र का सपना
हार चुका है दंगल

ईमान है, धर्म है

जो भी है
भाषा की छलना के बाहर
प्रसाद पाने के लिए
बढ़े हुए हाथ की
मँजी हुई शर्म है

नया लीड

आज फिर
जिंदगी को
बदलने के तरीके
उठ रहे हैं

आज फिर
मौसम
नंगा हो रहा है

आज फिर
मुल्क शोक पुस्तिका में
ढल रहा है

इसके पहले कि
अखबार में
कोई नया लीड आये
मैं जल्दी-से-जल्दी
किलकते हुए
बच्चों को चूम लेना चाहता हूँ।

वजन खोता आदमी

वह होकर बेकार

गया है
फुटपाथ पर
बजाते हुए घंटी
टिन-टना-टिन-टीन
और चीख रहा है
--- हुजूर मुझ पर
न कीजिये यकीन
मशीन तो
झूठ नहीं बोलेगी
आपको ठीक-ठीक तौलेगी
आइये
जूतों और कपड़ों को बादकर
अपना सही वजन
जानिये हुजूर